॥ श्रीः ॥

कृष्णदास प्राच्यविद्या ग्रन्थमाला
३४

***

शक्तिसङ्गमतन्त्रम्

ताराखण्डः

(शक्तिसङ्गमतन्त्रस्य द्वितीयखण्डात्मकः)

'सुधा'-हिन्दीव्याख्योपेतः

सम्पादक एवं व्याख्याकार

डॉ० सुधाकर मालवीय

एम.ए., पी-एच.डी., साहित्याचार्य
संस्कृत विभाग, कला-संकाय,
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
निदेशक
महामना संस्कृत अकादमी

एवं

पं० चित्तरंजन मालवीय

प्रवक्ता, महामना संस्कृत अकादमी

चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस
वाराणसी

तत्त्व को 'महः' की संज्ञा दी गई है । श्री विद्या के आम्नाय क्रम में मनु एवं कामराज, सुन्दरी, षोडशी एवं पराविद्या का विवेचन है ।

शक्तिसङ्गमतन्त्र अक्षोभ्य एवं महोग्रतारा (शिव-पार्वती) का संवादरूप है । इसमें चार खण्ड हैं—

१. **कालीखण्ड** (इक्कीस पटल में पूर्ण है ।)
२. **ताराखण्ड** (इकहत्तर पटल में पूर्ण है ।)
३. **सुन्दरीखण्ड** (इक्कीस पटल में पूर्ण हैं ।)
४. **छिन्नमस्ताखण्ड** (ग्यारह पटल में पूर्ण हैं ।)

सम्प्रति शक्तिसंगमतन्त्र का द्वितीय खण्ड **'तारा'खण्ड** आगम विद्वानों के समक्ष प्रस्तुत है। यह इकहत्तर पटलों में सम्पूर्ण है। इसकी विषयवस्तु इस प्रकार है—

प्रथम पटल

ब्रह्मस्वरूपिणी कालिका माहात्म्य कथन नामक इस पटल में कालिकागम में 'अनन्त' संख्याविधान कहा गया है । आगमग्रन्थ संख्या कथन, ग्रन्थ लक्षण कथन, तन्त्रग्रन्थ रहस्य कथन, आगम में सम्प्रदाय कथन, एकादश शाबरभेद कथन, एकादश अघोरभेद कथन, जैनागम कथन, चीनागम कथन, बौद्धागम कथन, कौलावधूतादि वैदिकशास्त्र कथन हैं ।

१. महाविद्या संख्या कथन, महाविद्या स्वरूप कथन, २. चतुर्युग में सिद्धविद्या कथन, सत्ययुग में महाविद्या कथन, ३. विद्याभेद विधान, सिद्धविद्या कथन, वीरनाथ मत में विद्याभेद कथन, नित्या मत में विद्या कथन, कुब्जा मत में महाविद्या विधान, सिद्धविद्यादि निर्णय एवं सिद्धविद्या कथन है ।

१. सत्ययुग में महाविद्या क्रम कथन, २. त्रेतायुग में विद्याक्रम कथन, ३. द्वापर में विद्याक्रम कथन, ४. कलियुग में विद्याक्रम कथन, उन्मत्तभैरव मत में विद्याभेद कथन और युगभेद से विद्या कथन है ।

कलियुग में कालिका माहात्म्य कथन, दक्षिणकाली नाम की निरुक्ति, कालीपूजा प्रयोग में मार्ग कथन, वामाचार परायण शक्ति कथन, वामाचार प्राशस्त्य कथन, उत्तमाम्नाय कथन, मध्यमाम्नाय कथन, कनिष्ठाम्नाय कथन, वामाम्नायादि कारणता कथन, ब्रह्मरूप महाचार में नियम कथन, सुन्दरी का हादिरूपत्व कथन, कहात्मकता कथन, कादिहादित्व कथन, महाकादि मत कथन, चिदानन्द स्वरूप कथन, दीक्षाविद्या विधि में सम्प्रदाय कथन, सम्प्रदायानुसार नामकरण कथन, कालीस्वरूप विवेचन, अभिषेक की आवश्यकता और आम्नायक्रम में विद्याभेद कहा गया है ।

द्वितीय पटल

अभिषेकस्तुतिकथन नामक इस पटल में पूर्णाभिषेक माहात्म्य एवं चतुर्याम द्वारा सिद्धिदा कालीविद्या कही गयी है ।

तृतीय पटल

मालाविधान नामक इस पटल में लोपामुद्रा स्वरूप कथन, मुण्डमाला· वि
नारिकेलमयी माला विधान एवं रुद्राक्षवत् मुण्डमाला धारण कहा गया है ।

चतुर्थ पटल

आम्नायादिनिर्णय कथन नामक इस पटल में आम्नायादि निर्णय कहा गया

पञ्चम पटल

ब्रह्मवीरा योगकथन नामक इस पटल में ब्रह्मत्व एवं निर्गुणत्व क
मुक्तिकथन, ब्रह्मानन्द कथन, स्वर्ग कथन, संक्रमावस्था कथन, सामरस्य का स्थान
और शक्ति के आकर्षण की कथा वर्णित है । राजराजेश्वरी शक्त्युत्पत्ति क

तृतीय पटल

मालाविधान नामक इस पटल में लोपामुद्रा स्वरूप कथन, मुण्डमाला· विधान, नारिकेलमयी माला विधान एवं रुद्राक्षवत् मुण्डमाला धारण कहा गया है ।

चतुर्थ पटल

आम्नायादिनिर्णय कथन नामक इस पटल में आम्नायादि निर्णय कहा गया है ।

पञ्चम पटल

ब्रह्मवीरा योगकथन नामक इस पटल में ब्रह्मत्व एवं निर्गुणत्व कथन, मुक्तिकथन, ब्रह्मानन्द कथन, स्वर्ग कथन, संक्रमावस्था कथन, सामरस्य का स्थान कथन और शक्ति के आकर्षण की कथा वर्णित हैं । राजराजेश्वरी शक्त्युत्पत्ति कथन, षोडश्युत्पत्ति कथन, राजराजेश्वर शिवोत्पत्ति कथन, समस्त प्रपञ्च की रचना कथन, कादि-हादि मत कथन, मेरु संज्ञा कथन, शास्त्र प्रपञ्चत्व कथन, अन्योऽन्य मत की निन्दा तथा भिन्नतात्मत्व कथन एवं भवतारिणी कालिका विद्या का प्राकट्य कहा गया है ।

षष्ठ पटल

शक्तिकोण विनिर्णय विधान नामक इस पटल में सुन्दरीस्वरूप कथन, षोढापञ्चक न्यास कथन, कुल्लुकार्चा विधि विधान, १. काली कुल्लूकार्चा मन्त्रोद्धार, षडङ्गन्यास कथन, २. तारिणी कुल्लुका मन्त्रोद्धार, विनियोग कथन, षडङ्गन्यास कथन, ३. नीला-सरस्वती कुल्लुका मन्त्रोद्धार, विनियोग कथन, ४. सुन्दरी कुल्लुका मन्त्रोद्धार एवं विनियोग कहा गया है ।

सप्तम पटल

विद्यासिद्धि में यक्षिणी मण्डल निरूपण नामक इस पटल में सिद्ध मण्डल कथन एवं दशविद्या विधि में यक्षिणी की परिभाषा कही गयी है ।

अष्टम पटल

यक्षिण्यादि महासिद्धि निरूपण नामक इस पटल में ऊर्ध्वाम्नाय परिज्ञान माहात्म्य कथन, वाग्भव माहात्म्य कथन, शब्द ब्रह्म निरूपण एवं वाग्भव बीज माहात्म्य कहा गया है ।

नवम पटल

आसन निरूपण नामक इस पटल में मुण्डभेद कथन, मुण्ड प्रयोग कथन, कालिका परिशिष्टानुसार मुण्ड प्रयोग कथन, साधनार्थादि मुण्ड प्रयोग कथन, वर्जित मुण्ड कथन, प्रशस्त मुण्ड कथन, मुण्डार्थं प्रशस्त दिवस कथन, मुण्डमाला भेद कथन, राजदन्त लक्षण कथन, राजदन्त के विषय में कालिका संहितोक्त मत कथन, मालार्थ सूत्र कथन, प्रयोगार्थ सूत्र का उत्तमत्व कथन, त्रिशक्ति विवेचन एवं सखण्ड मुण्ड लक्षण कहा गया है ।

दशम पटल

वीरसिद्धेश्वरी विद्या निरूपण नामक इस पटल में मुण्डकोपासन कथन, मुण्ड

निर्माण कथन, मुण्ड साधना स्थल निरूपण, वीरसाधना कथन, वीरचर्या माहात्म्य न, पूजायन्त्र निर्माण कथन, कालिका विद्या में सर्वविद्या समाहार कथन एवं सगुण-ण भेद कहा गया है ।

एकादश पटल

कवचादि पुरश्चर्या कथन नामक इस पटल में त्रिशक्ति तत्त्व कथन, पुरश्चरण ग कथन, स्तोत्र स्वरूप कथन, कवचादि होम विधान, सांख्यायन मत में होम ान, उपोद्धात विधान, काश्मीराख्य क्रम में होम विधान, काश्मीर केरल मत में ार भेद और कामरूपागम मत कहा गया है ।

बारहवाँ पटल

भूतशुद्धि निर्णय निरूपण नामक इस पटल में केरलमतानुसार भूतशुद्धि कथन

दुर्ग निर्माण कथन, मुण्ड साधना स्थल निरूपण, वीरसाधना कथन, वीरचर्या माहात्म्य कथन, पूजायन्त्र निर्माण कथन, कालिका विद्या में सर्वविद्या समाहार कथन एवं सगुण-निर्गुण भेद कहा गया है ।

एकादश पटल

कवचादि पुरश्चर्या कथन नामक इस पटल में त्रिशक्ति तत्व कथन, पुरश्चरण प्रयोग कथन, स्तोत्र स्वरूप कथन, कवचादि होम विधान, सांख्यायन मत में होम विधान, उपोद्घात विधान, काश्मीराख्य क्रम में होम विधान, काश्मीर केरल मत में परस्पर भेद और कामरूपागम मत कहा गया है ।

बारहवाँ पटल

भूतशुद्धि निर्णय निरूपण नामक इस पटल में केरलमतानुसार भूतशुद्धि कथन है। कश्मीरमतानुसार भूतशुद्धि कथन, गौडमतानुसार भूतशुद्धि कथन, चैतन्याख्य क्रमानुसार भूतशुद्धि कथन है । फिर पञ्चपारायण क्रम एवं पारायण स्वरूप कहा गया है ।

तेरहवाँ पटल

कौलतीर्थ विनिर्णय कथन नामक इस पटल में कौलतीर्थ कथन, चतुष्पीठ लक्षण कथन, महापीठ कथन, पीठशक्ति का स्वरूप कथन, शक्तिरहस्य निर्णय, पुंरूप आचार कथन, चतुष्पीठ भेद कथन, व्यभिचारानुक्रम से अन्य नाम, अधिराज क्रम से पूर्व के पञ्चपीठ, उनकी कन्या के नाम, शक्तिगृह लक्षण कथन, 'पुष्पिणीयोग' कथन, साधक के लक्षण, निर्विकल्पक साधक के लक्षण, दशमहाविद्यात्मक स्त्रीरूप कथन, स्त्री के अभाव में साधना कथन, षष्टि सिद्धिदातृ साधन, मानसपूजा कथन, यौवनाङ्कुर कथन, स्त्री देह में ब्रह्माण्ड का स्फुटत्व कहा गया है ।

चौदहवाँ पटल

शक्तिपूजाक्रम कथन नामक इस पटल में कन्याष्टक कथन, कुलाष्टक कथन, महा कुलाष्टक कथन एवं कुलाष्टकान्तर कथन है । फिर बिन्दु का स्वरूपदर्शन कथन, यागोपकरण कथन, बिन्दुस्वरूप ब्रह्मयोग माहात्म्य कथन, ज्ञान से सिद्धि कथन है । फिर सर्वपर्वोत्तमोत्तम ग्रस्तास्त योग कथन, सर्वसिद्धि प्रदायक ग्रस्तोदय योग कथन, दिवा योग कथन, महासाम्राज्य योग कथन एवं पशु योग कथन है । फिर उपवास विधान, सम्प्रदाय फल कथन, सम्प्रदाय शब्द की व्युत्पत्ति, १. केरल सम्प्रदाय कथन, २. कश्मीर सम्प्रदाय कथन, ३. गौड सम्प्रदाय कथन और सम्प्रदाय त्रय में नियम कहा गया है ।

पन्द्रहवाँ पटल

गवाक्ष योग वर्णन नामक इस पटल में शक्ति लक्षण कथन, पुरुष लक्षण कथन, पुंस्वरूप कथन और साधनान्तर कथन है । फिर साधनान्तर कथन और सिद्धेश्वरी लक्षण कथन एवं चातुर्वर्ण्य क्रम कहा गया है ।

सोलहवाँ पटल

नवरात्र निर्णय नामक इस पटल में प्रकारान्तर से प्रयोग कथन की दस विधा

कही गयी है । वाग्भेद कथन, शापानुग्रह रूप वाग्भेद कथन, महाकवित्व रूप व कथन, लतारूप कथन, शक्ति देह में ब्रह्माण्ड प्रतिष्ठा कथन, चीनद्रुम लता मा कथन, कलावर्ष परिभाषा कथन, सिद्ध लक्षण कथन, महा कल्पलता मूल में ध्या कहा गया है ।

सत्रहवाँ पटल

ग्रहलक्षण कथन नामक इस पटल में ग्रहण द्वैविध्य कथन, ग्रस्तास्त परिभाषा कथन, सर्वसिद्धीश्वर प्रयोग कथन, सर्वतोमुखी श्रीप्राप्ति प्रयोग व सर्वसिद्धीश्वर प्रयोग कथन, सर्वदीक्षोत्तमोत्तमा दीक्षा विधान, चन्द्रग्रहण में पुरश्चरण कथन, अथवा अन्य प्रकार से पुरश्चरण कहा गया है ।

अठारहवाँ पटल

कही गयी है। वाग्भेद कथन, शापानुग्रह रूप वाग्भेद कथन, महाकवित्व रूप वाग्भेद कथन, लतारूप कथन, शक्ति देह में ब्रह्माण्ड प्रतिष्ठा कथन, चीनद्रुम लता माहात्म्य कथन, कलावर्ष परिभाषा कथन, सिद्ध लक्षण कथन, महा कल्पलता मूल में ध्यानयोग कहा गया है।

सत्रहवाँ पटल

ग्रहलक्षण कथन नामक इस पटल में ग्रहण द्वैविध्य कथन, ग्रस्तास्त ग्रहण परिभाषा कथन, सर्वसिद्धीश्वर प्रयोग कथन, सर्वतोमुखी श्रीप्राप्ति प्रयोग कथन, सर्वसिद्धीश्वर प्रयोग कथन, सर्वदीक्षोत्तमोत्तमा दीक्षा विधान, चन्द्रग्रहण में पुरश्चरण प्रयोग कथन, अथवा अन्य प्रकार से पुरश्चरण कहा गया है।

अट्ठारहवाँ पटल

पूजाचिह्न विधि कथन नामक इस पटल में गौडादि सम्प्रदाय क्रम में पूजा प्रयोग विधान, छिन्नादि पूजाक्रम में दिग्विधान, यन्त्र में बिन्दुविहीन त्रिकोणादि निषेध कथन, सामान्यार्घ्य लक्षण, केरलादि सिद्धान्त में पात्र प्रयोग कथन, विरूपाक्ष मत कथन, वीरभद्र मत कथन, बटुक मत कथन, आनन्द मत कथन, कराल मत कथन, विकराल मत कथन, महादेव मत कथन, दक्षिणाख्य मत कथन, वटवासि मत कथन, गौडोक्तक्रम कथन, कपालादि पात्र प्रयोग कथन, कपालिना सिद्धि कथन, कपाल त्रय विवेचन, सूर्यार्घ्य पात्र विवेचन, कल्पित पीठ में पूजा कथन, तत्त्वपीठ में पूजा कथन, यन्त्रपीठ में मुख्यता कथन, यन्त्रपूजन कथन एवं केरलादि सम्प्रदाय में होम व्यवस्था कथन है। संप्रदायत्रयानुसार पात्र स्थापन कथन, पात्र स्थापन दिक्कथन, पात्र संघट्टन व्यवस्था कथन, पात्र विसर्जन व्यवस्था कथन, दिव्यादि पात्रव्यवस्था कथन, स्वयं पानव्यवस्था कथन एवं जल प्रक्षेप का फल कहा गया है।

उन्नीसवाँ पटल

आरार्त्तिक विनिर्णय नामक इस पटल में गौड़ दीप निर्माण कथन, पात्र सिद्धि के लक्षण एवं बीजयुक्त यन्त्र सजीवता कथन, चैतन्यादि मत में प्राच्यादि क्रम से बीज लेखन विधान, यन्त्र सिद्धि के लक्षण तथा सर्वशास्त्रमयी घट सिद्धि प्रतिपादित है।

विंशति पटल

दशविद्यादि पूजाक्रम कथन नामक इस पटल में महा नीलक्रम में चीनाचार विधान, महा नीलक्रम में साधक का आचार विधान, अक्षमाला विधान, महानीलक्रम में साधक का आसन विधान है। जय दुर्गादि मन्त्र प्रयोग विधान, जूटिकाबन्धनादि कथन, निष्कल नील मार्ग में नियम कथन एवं विष्टर-निर्माण कहा गया है।

एकविंशति पटल

महाचीनक्रमविधान नामक इस पटल में पञ्चचीनक्रम कथन, द्विविध महाचीनक्रम कथन, महाचीनक्रम में स्नानादि नियम कथन, महाचीनक्रम में जपादि नियम कथन, महाचीनक्रम में कालादि का नियम कहा गया है।

द्वाविंशति पटल

गन्धर्वाख्य क्रम कथन नामक इस पटल में गन्धर्वाख्यक्रम में पुष्पवर्ण कथन, न्धर्वाख्यक्रम में निवास कथन, घण्टा नादोपशोभित गृह की आवश्यकता एवं ाभूषणादि से भूषित गन्धर्वाख्य क्रम प्रतिपादित है।

त्रयोविंशति पटल

छिन्नमस्ता क्रम कथन नामक इस पटल में नाडीत्रयकथन, गवाक्षयोगाभ्यास थन एवं तिलक विधान कहा गया है।

चतुर्विंशति पटल

सृष्ट्यादि क्रम में बगला पूजा क्रम विधान नामक इस पटल में सृष्ट्यादि क्रम से

द्वाविंशति पटल

गन्धर्वाख्य क्रम कथन नामक इस पटल में गन्धर्वाख्यक्रम में पुष्पवर्ण कथन, गन्धर्वाख्यक्रम में निवास कथन, घण्टा नादोपशोभित गृह की आवश्यकता एवं आभूषणादि से भूषित गन्धर्वाख्य क्रम प्रतिपादित है।

त्रयोविंशति पटल

छिन्नमस्ता क्रम कथन नामक इस पटल में नाडीत्रयकथन, गवाक्षयोगाभ्यास कथन एवं तिलक विधान कहा गया है।

चतुर्विंशति पटल

सृष्ट्यादि क्रम में बगला पूजा क्रम विधान नामक इस पटल में सृष्ट्यादि क्रम से बगला पूजाक्रम कहा गया है।

पचीसवाँ पटल

महाराजक्रम कथन नामक इस पटल में महाराजक्रम में मण्डप कथन एवं महाराजक्रम में साधकोत्तम का लक्षण कहा गया है।

छब्बीसवाँ पटल

भुवनेश्वरीक्रम कथन नामक इस पटल में भुवनेश्वरीक्रम कहा गया है।

सत्तइसवाँ पटल

कमलाक्रम कथन नामक इस पटल में कमलाक्रम कहा गया है।

अट्ठइसवाँ पटल

धूमावतीक्रम कथन नामक इस पटल में धूमावतीक्रम कहा गया है।

उन्तीसवाँ पटल

ब्रह्ममार्गक्रम कथन नामक इस पटल में ब्रह्ममार्गक्रम कहा गया है।

तीसवाँ पटल

क्रममाला विनिर्णय कथन नामक इस पटल में कलियुग में स्वयंभू पुष्पत्रय कथन और कश्मीराख्य क्रम में पुष्पत्रय कहा गया है।

इकतीसवाँ पटल

क्रमफलकथन नामक इस पटल में नीलमार्गक्रम में सिद्धि काल कथन, महानीलक्रम में संख्या कथन, गन्धर्वाख्य क्रम में संख्याकथन, महाचीनक्रम में संख्या कथन, महाराजक्रम में संख्या कथन, ब्रह्मभाव क्रम कथन, कलार्चनक्रम में संख्या कथन, धूम्रभावे संख्याकथन कहा गया है।

बत्तीसवाँ पटल

मुद्रासङ्केतक कथन नामक इस पटल में मकार पञ्चक संकेत विधान, मुद्रारहस्य

कथन, पञ्चमकार रहस्य कथन, मद्यादि पञ्च मकार रहस्य कथन, अभ्यासयोग से रस प्राप्ति कथन, कुण्डलिनी रस रहस्य कथन, मकार पञ्चक रहस्य कथन कहा गया है।

तैंतीसवाँ पटल

पानसङ्केत कथन नामक इस पटल में पञ्चमुद्राख्य सङ्केत कथन, १. महादिव्य पान लक्षण, २. दिव्यपान लक्षण, ३. वीरपान लक्षण कथन, ४. पशुपान लक्षण कथन, पशुपान क्रम कथन, ५. महापशु लक्षण कथन एवं महाकौल लक्षण कहा गया है।

चौंतीसवाँ पटल

लतासङ्केत कथन नामक इस पटल में लताद्वय कथन, लताद्वय प्रयोग कथन, लता संयोजन कथन, लता प्रवोध कथन एवं वाग्वेधादि पञ्चवेध कहा गया है।

पैंतीसवाँ पटल

लतारूप कथन नामक इस पटल में अविकारी साधक का लक्षण, कुलशास्त्रज्ञ

कथन, पञ्चमकार रहस्य कथन, मद्यादि पञ्च मकार रहस्य कथन, अभ्यासयोग से रस प्राप्ति कथन, कुण्डलिनी रस रहस्य कथन, मकार पञ्चक रहस्य कथन कहा गया है ।

तैंतीसवाँ पटल

पानसङ्केत कथन नामक इस पटल में पञ्चमुद्राख्य सङ्केत कथन, १. महादिव्य पान लक्षण, २. दिव्यपान लक्षण, ३. वीरपान लक्षण कथन, ४. पशुपान लक्षण कथन, पशुपान क्रम कथन, ५. महापशु लक्षण कथन एवं महाकौल लक्षण कहा गया है ।

चौंतीसवाँ पटल

लतासङ्केत कथन नामक इस पटल में लताद्वय कथन, लताद्वय प्रयोग कथन, लता संयोजन कथन, लता प्रवोध कथन एवं वाग्वेधादि पञ्चवेध कहा गया है ।

पैंतीसवाँ पटल

लतारूप कथन नामक इस पटल में अविकारी साधक का लक्षण, कुलशास्त्रज्ञ कर्तव्य कथन, अदीक्षित कुल सङ्ग से सिद्धि हानि कथन, कुल नाम वर्जन कथन, कुल के आने पर स्वागत कथन, दृष्टदोष होने पर भी शिक्षावर्जन कथन, स्वकुल रक्षा कथन, कुल के आने पर सिद्ध्यर्थ प्रयोग कथन, कुल पूजा प्रयोग कथन, सुप्त मन्त्र लक्षण कथन एवं सर्वमन्त्र प्रबोधिनीत्व कथन है ।

छत्तीसवाँ पटल

निशा पूजा कथन नामक इस पटल में निशा पूजा प्रयोग कथन, कुलाचार कथन, शाम्भवी विद्या कथन, वनिता सन्निधि विना सिद्धि निषेध कथन, योषिन्मात्र में ईश्वरी शक्ति कथन है ।

सैंतीसवाँ पटल

शक्तिसङ्गम रहस्य कथन नामक इस पटल में रहस्याख्य कर्मविधान, शक्ति-पूजा रहस्य कथन, शक्तिपूजन में अधिकारी कथन, लौकिक मैथुनजन्य दोष कथन, अर्चनाधिकारी कथन, ज्ञानविशिष्ट साधक की आवश्यकत्व कथन, मद्धावापन्नरहित-साधक प्रतिनिधि विधान, अलि बलि से सर्वसिद्धित्व कथन, पूजा प्रकरण विशेष कथन, वरदायिनी तिथि कथन, अगम्यागमन आदि से अपवित्र साधक पूजा निषेध कथन, मद्य प्रकार कथन, मद्य विहिताविहितत्व कथन, कुलमद्य से पूजा कथन, विहित मद्य से पूजा कथन, ताम्बूल चर्वणानन्तर कालिका जप विधान, कालीं को छोड़कर पूजा निषेध कथन, महालक्ष्मी पूजन काल कथन, श्रेष्ठ पूजा स्थान कथन एवं नरमुण्ड चयन कहा गया है ।

अड़तीसवाँ पटल

वीरसाधनाकथन नामक इस पटल में चीनमार्गानुसार स्नान एवं नत्यादि कथन, छिन्नमस्ता विधि में नमस्कारादि विधि कथन, मञ्जुघोष लक्षण कथन, बलिप्रयोगार्थ द्रव्य कथन, बलिप्रयोग कथन, मूलबलि मन्त्र कथन, बलि मन्त्रोद्धार, श्मशानवासिनी बलि

ोद्धार, महावीरमत में साधना कथन, नीलक्रमानुसार जप संख्या कथन, वीरार्गलादि मन्त्र विधान, महानीलक्रम में स्नान विधि प्रतिपादित है ।

उनतालीसवाँ पटल

मुण्डासन कथन नामक इस पटल में मुण्डासन संख्या कथन, मुण्डासन स्थान न, मुण्डसाधन मे आसन भेद कथन, मुण्डासनादि आसन स्थापन स्थान कथन, डासनादि पूजा प्रयोग स्थान कथन, नैवेद्य विनियोजन कथन, नैवेद्य का अमृतरूपत्व न, अङ्गाङ्गिभाव विचार कथन एवं पूर्वपीठ ज्ञान की आवश्यकता कही गयी है ।

चालीसवाँ पटल

मालाविधान नामक इस पटल में माला भेद कथन, वर्णमाला त्रय कथन, ोत्तरशती माला कथन है ।

मन्त्रोद्धार, महावीरमत में साधना कथन, नीलक्रमानुसार जप संख्या कथन, वीरार्गलादि पञ्च मन्त्र विधान, महानीलक्रम में स्नान विधि प्रतिपादित है ।

उनतालीसवाँ पटल

मुण्डासन कथन नामक इस पटल में मुण्डासन संख्या कथन, मुण्डासन स्थान कथन, मुण्डसाधन मे आसन भेद कथन, मुण्डासनादि आसन स्थापन स्थान कथन, मुण्डासनादि पूजा प्रयोग स्थान कथन, नैवेद्य विनियोजन कथन, नैवेद्य का अमृतरूपत्व कथन, अङ्गाङ्गिभाव विचार कथन एवं पूर्वपीठ ज्ञान की आवश्यकता कही गयी है ।

चालीसवाँ पटल

मालाविधान नामक इस पटल में माला भेद कथन, वर्णमाला त्रय कथन, अष्टोत्तरशती माला कथन है ।

इकतालीसवाँ पटल

मालाग्रथन विवेचन नामक इस पटल में मुण्ड के अभाव में मनिका विधांन, विद्यादि मालिका फल कथन, रत्नमात्रमया मालाभेद कथन, मातृका वर्णरूपा मालिका-निर्माण कथन, यन्त्रप्रतिमा धारण विधान एवं उपचार देवता नाम कथन कहा गया है

बयालीसवाँ पटल

पूजासिद्धिकथन नामक इस पटल में दशविद्याक्रम में पूजा कथन, गुरुदीक्षाहीन दुर्गति कथन एवं ऊर्ध्वाम्नाय सम्पन्न साधक की आवश्यकता कहा गया है ।

तिरालिसवाँ पटल

वीर साधन मार्ग से याममात्र में सिद्धि कथन नामक इस पटल में कालिकादि सिद्धिदा विद्या जपसंख्या कथन, शाबर सिद्धि प्रदानत्व कथन, सिद्धिदायक दश बटुक कथन, सिद्धिकर देवता कथन, अविनाभाव सम्बन्ध कथन, बीजाङ्कुरन्याय योगत शिवशक्त्यात्मकत्व कथन, वीरसाधन मार्ग से सिद्धिकथन, वीरसाधन मार्ग माहात्म्य कथन एवं मन्त्रमात्र में वीरसाधन मार्ग की आवश्यकता कहा गया है ।

चौवालिसवाँ पटल

सुन्दरीसाधनक्रम कथन नामक इस पटल में याममात्र में सिद्धि कथन, वीरसाधन प्रयोग कथन, साधना स्थल कथन, बलिदान देवताक्रम कथन, वीरस्नान कथन, नैवेद्य कथन, दशविद्याक्रम में धूप विधान एवं जयदुर्गादि मन्त्र कहा गया है ।

पैंतालिसवाँ पटल

सूतकद्वयनिर्णय कथन नामक इस पटल में **सूतकनिर्णयकथन** नामक इस पटल में मन्त्रात्मक शरीर जातसूतक कथन, जातसूतक परिभाषाकथन, जातसूतक दोष निवारणार्थ जप कथन, मृत सूतक परिभाषा कथन, केरलादि संप्रदाय त्रये देवताविसर्जन व्यवस्था कथन, देवता विसर्जन स्थान कथन, मन्त्रसाधक की इतिकर्तव्यता निरूपण कहा गया है ।

छियालिसवाँ पटल

मन्त्रजाप विधान नामक इस पटल में पूर्णाभिषेक संयुक्त सूतकराहितत्व कथन, सूतक प्रतिपादन, हादिकादि मत में देवता भेद कथन, ग्रहण में पुरश्चरण कथन, अभिषेक प्रशंसा कथन, पूर्णाभिषेक रहित जप का निरर्थकत्व कथन कहा गया है ।

सैंतालिसवाँ पटल

अश्वासननिरूपण नामक इस पटल में यन्त्रस्थापन सिद्धान्त कथन, दशविद्या क्रम में दश धूप कथन, वरासन कथन, वरासन प्रयोग दुर्लभत्व कथन, आसनद्वय कथन, देहासन कथन, परिभाषासन कथन, सजीवासन कथन, निर्जीवासन कथन, सुखासन कथन, जातिभेद से चतुर्विध आसन व्यवस्था कथन, देशभेद से अश्व संख्या कथन, वर्णभेद से अश्व संख्या और इनका फल कथन है ।

नवग्रहासनों का फलकथन, रोगादि मुक्ति प्रयोग कथन, नवनिधीश्वर प्रयोग कथन,

छियालिसवाँ पटल

मन्त्रजाप विधान नामक इस पटल में पूर्णाभिषेक संयुक्त सूतकराहितत्व कथन, सूतक प्रतिपादन, हादिकादि मत में देवता भेद कथन, ग्रहण में पुरश्चरण कथन, अभिषेक प्रशंसा कथन, पूर्णाभिषेक रहित जप का निरर्थकत्व कथन कहा गया है।

सैंतालिसवाँ पटल

अश्वासननिरूपण नामक इस पटल में यन्त्रस्थापन सिद्धान्त कथन, दशविद्या क्रम में दश धूप कथन, वरासन कथन, वरासन प्रयोग दुर्लभत्व कथन, आसनद्वय कथन, देहासन कथन, परिभाषासन कथन, सजीवासन कथन, निर्जीवासन कथन, सुखासन कथन, जातिभेद से चतुर्विध आसन व्यवस्था कथन, देशभेद से अश्व संख्या कथन, वर्णभेद से अश्व संख्या और इनका फल कथन है।

नवग्रहासनों का फलकथन, रोगादि मुक्ति प्रयोग कथन, नवनिधीश्वर प्रयोग कथन, त्रैलोक्यविजयीत्व प्रयोग कथन, पुरश्चरण कथन, वर्णासन प्रयोग कथन, राज्यप्राप्ति प्रयोग कथन, शत्रुदासत्व प्रयोग कथन, राजेश्वरत्व प्रयोग कथन, सर्वसिद्धीश्वरत्व प्रयोग कथन, पृथ्वीपतित्व प्रयोग कथन, बेतालकिङ्करत्व प्रयोग कथन, विष्णुत्व प्रयोग कथन, त्रिलोकवशित्व प्रयोग कथन, मासमात्र में सिद्धिप्राप्ति प्रयोग कथन, सर्वज्ञत्व प्रयोग कथन, त्रिलोकेशत्व प्रयोग कथन, वाक्पतित्व प्रयोग कथन एवं काम्बोजादि देशाश्व प्रयोग का फल कहा गया है।

अड़तालिसवाँ पटल

गजव्याघ्रासन कथन नामक इस पटल में १. गजासन कथन, २. भद्रासन कथन, ३. मृद्वासन कथन, ४. मृगासन कथन, ५. मिश्रासन कथन, ६. दक्षिण देशस्थ गजासन कथन, ७. सामुद्रीय गजासन कथन, ८. पूर्वदेशीय गजासन कथन, ९. उत्तरदेशीय गजासन कथन, १०. पल्लकी स्थासन कथन, ११. गण्डकी स्थासन कथन, १२. मानुषासन कथन, १३.महिषासन कथन, १४. वृषभासन कथन, १५. भल्लुकासन कथन, १६. सुग्रीवासन कथन, १७. हनुमदासन कथन, १८. जाम्बुवानासन कथन, १९. नीलासन कथन, २०. नलासन तथा २१. अंगदासन कथन हैं।

१. व्याघ्रासन कथन, २. चित्र व्याघ्रासन कथन, ३. अष्ट व्याघ्रासन कथन, ४. वल्ली व्याघ्रासन कथन, ५. धूसरासन कथन, ६. बिन्दुमान् व्याघ्रासन कथन, ७. महा व्याघ्रासन, ८. रोम व्याघ्रासन कथन, ९. कृष्णवर्ण राजासन कथन एवं १०. महाराज व्याघ्रासन कहा गया है।

उन्चासवाँ पटल

शिवासनादि कथन नामक इस पटल में शिवारोहणनिरूपण कहा गया है। १. मेषासन कथन, २. अजासन कथन, ३. उष्ट्रासनकथन, ४. मृगासन कथन, आसनविकल्पकथन, ५. कुक्कुटासन कथन, ६. कुक्कुरासनकथन, ७. मयूरासन कथन, ८. शरभासन कथन, ९. गवयासन कथन, १०. शूकरासन कथन, ११. शबरासन कथन,

१३. तरण्यासन कथन, १४. महा नौकासन कथन, १५.रथासन कथन, १६. शकटासन कथन, १७. सुखासन कथन, १८. दण्डिकारोहणासन कथन, १९. दोलासन कथन, २०. चक्रासन कथन, २१. दोला चक्रासन कथन, २२. पादासन कथन, २३. कुररासन कथन, २४. कच्छपासन कथन, २५. खड्गासन कथन, २६. सुखासन कथन, २७. गजासन कथन, २८. नररथासन कथन, २९. वलीवर्द्द रथासन कथन, ३०. वाजि रथासन कथन, ३१. सुरथासन कथन, ३२. महिषासन कथन, ३३. महा नरपत्यासन कथन, ३४. महा हयपत्यासन कथन, ३५. महा गजपत्यासन कथन, ३६. मेषाख्य रथासन कथन, ३७. अजाख्य रथासन कथन, ३८. शरभासन कथन, ३९. करिण्यासन कथन, ४०. अश्विन्यासन कथन, ४१. सुखासन कथन, ४२. गजासन कथन, ४३. अश्वासन कथन, अस्थिसार मालिका निर्माण कथन एवं ४४. जीवचक्रासन में सिद्धि कथन है।

पचासवाँ पटल

१३. तरण्यासन कथन, १४. महा नौकासन कथन, १५.रथासन कथन, १६. शकटासन कथन, १७. सुखासन कथन, १८. दण्डिकारोहणासन कथन, १९. दोलासन कथन, २०. चक्रासन कथन, २१. दोला चक्रासन कथन, २२. पादासन कथन, २३. कुररासन कथन, २४. कच्छपासन कथन, २५. खड्गासन कथन, २६. सुखासन कथन, २७. गजासन कथन, २८. नररथासन कथन, २९. वलीवर्द रथासन कथन, ३०. वाजि रथासन कथन, ३१. सुरथासन कथन, ३२. महिषासन कथन, ३३. महा नरपत्यासन कथन, ३४. महा हयपत्यासन कथन, ३५. महा गजपत्यासन कथन, ३६. मेषाख्य रथासन कथन, ३७. अजाख्य रथासन कथन, ३८. शरभासन कथन, ३९. करिण्यासन कथन, ४०. अश्विन्यासन कथन, ४१. सुखासन कथन, ४२. गजासन कथन, ४३. अश्वासन कथन, अस्थिसार मालिका निर्माण कथन एवं ४४. जीवचक्रासन में सिद्धि कथन है।

पचासवाँ पटल

देवतासन निर्णय कथन नामक इस पटल में कुलवृक्ष के नीचे साधना का फल कहा गया है। १. कालीकुल में कुलवृक्ष विधान, २. छिन्नाविद्या विधि में कुलवृक्ष विधान, ३. ताराविद्या विधि में कुलवृक्ष विधान, ४. श्रीविद्या विधि में कुलवृक्ष विधान है।

पञ्च प्रेतासन कथन, सुन्दरी देवी का आसन कथन, काली विद्या का आसन कथन, महोग्रतारिणी देवी का आसन कथन, बगला विद्या का आसन कथन, सिद्धविद्या का आसन कथन, धूमावती विद्या का आसन कथन, श्रीविद्या का आसन कथन, भुवनेशी विद्या का आसन कथन एवं महारुद्रादि देव का आसन कहा गया है।

इक्यावनवाँ पटल

यन्त्र धारण विधान नामक इस पटल में साम्राज्य मुद्रिका मन्त्र विधान, यन्त्र धारण स्थान विधान, वाजिगत्यादि लेखन प्रकार कथन, वाजिगत्यादि यन्त्रलेखन फल कथन, प्रथम कोष्ठ में कलास्थापन क्रम कथन, मध्य कोष्ठ में कलास्थापन क्रम कथन, विंशत्संख्याभिधान से शक्ति कथन एवं यन्त्र धारण काल कहा गया है।

बावनवाँ पटल

यन्त्रलेख्य कथन नामक इस पटल में पुरश्चर्यायुत साधक का फल कथन, उग्रतारा लक्षण कथन, चतुर्दशदिनात्मक प्रयोग कथन एवं राज्यप्राप्ति प्रयोग कहा गया है।

तिरपनवाँ पटल

मुद्रा संक्षेप कथन नामक इस पटल में स्वयं अशक्त होने पर प्रतिनिधि का विधान, प्रतिनिधि लक्षण कथन, उपासना में प्रतिनिधि निषेध विधान, यन्त्रस्थापन धातु कथन, स्थापनयन्त्र फल कथन एवं वज्रमुद्रा धारण का फल कहा गया है।

चौवनवाँ पटल

रत्नसङ्केत कथन नामक इस पटल में प्रवालादि रत्न का दोषावहत्व वर्णित है। प्रवालादि रत्न भेद कथन, दोषावह रत्न विधान, यन्त्र धारण का फल कथन, कामना

द्रव्य भेदानुसार प्रयोग कथन, त्रैलोक्यनिग्रहार्थ प्रयोग कथन, त्रैलोक्याकर्षण प्रयोग कथन, लेखन का मान कथन और रत्ननिर्मित पीठ माहात्म्य कथन, ज्ञानी साधक का धन्यत्व कथन, घर्म में तापन प्रयोग कथन, आकर्षण प्रयोग कथन, प्रयोगार्थ पीठ विधान एवं यजनक्रम विधान किया गया है।

पचपनवाँ पटल

रत्नसङ्केतकथन नामक इस पटल में स्वर्णादि धारणार्थ स्थानसंकेत कथन, दशविद्या विधि में मालाधारण का नियम एवं सिद्धविद्या विधि में माला धारण का नियम कहा गया है।

छप्पनवाँ पटल

द्रव्य भेदानुसार प्रयोग कथन, त्रैलोक्यनिग्रहार्थं प्रयोग कथन, त्रैलोक्याकर्षण प्रयोग कथन, लेखन का मान कथन और रत्ननिर्मित पीठ माहात्म्य कथन, ज्ञानी साधक का धन्यत्व कथन, घर्म में तापन प्रयोग कथन, आकर्षण प्रयोग कथन, प्रयोगार्थ पीठ विधान एवं यजनक्रम विधान किया गया है ।

पचपनवाँ पटल

रत्नसङ्केतकथन नामक इस पटल में स्वर्णादि धारणार्थ स्थानसंकेत कथन, दशविद्या विधि में मालाधारण का नियम एवं सिद्धविद्या विधि में माला धारण का नियम कहा गया है ।

छप्पनवाँ पटल

मालानिर्णय कथन नामक इस पटल में माला निर्णय कहा गया है ।

सत्तावनवाँ पटल

मालाफल प्रकथन नामक इस पटल में रुद्राक्षादि की माला का फलकथन, चण्डघण्टा विधि में माला कथन, छिन्नमस्तका शक्ति मन्त्र का विधान, शक्तिमन्त्र में रुद्राक्ष माला का निषेध कहा गया है ।

अट्ठावनवाँ पटल

कालीविवरण नामक इस पटल में शिवयोगी कथन, स्त्री-दीक्षा विधान, देवीपरम्परोद्दिष्ट स्त्रियों की दीक्षा और सिद्धान्त कथन, श्रेष्ठत्व के अभाव में दीक्षा नियम कथन, वाचन में शक्ति के अभाव में नियम कथन, वाचन शक्त्यभाव में नियमान्तर कथन एवं प्रकारान्तर से दीक्षा विधान प्रस्तुत है ।

पशु संप्रदाय की दीक्षा विधि, प्रपञ्चभूता महाकाली का स्वरूप कथन, शिव-ब्रह्मरूपा शक्ति का निरूपण, काली एवं सुन्दरी में भेद दर्शन का गर्हितत्व कथन, कादि-हादि मत विवेचन, कादि-हादि मत कारण कथन, कादि-हादि परिभाषा कथन, सौन्दर्य में प्रपञ्च की स्थिति एवं काली में प्रपञ्च का अभाव कहा गया है ।

उनसठवाँ पटल

योगनिर्णयकथन नामक इस पटल में शिवशक्त्यात्मक ब्रह्म का विवेचन, पर्जन्यादिक लक्षण कथन एवं पर्जन्य में सर्वदेवमयत्व कथन, देहरूपाधिष्ठान पर्जन्यत्व कथन, योगाभ्यास द्वारा ब्रह्मानन्द की प्राप्ति एवं देहनाडी प्रयोग कथन, कालीयोगरूपा स्त्रियां का निरूपण, कुमारी पूजक का माहात्म्य कथन एवं कुमारी पूजक धन्यत्व कहा गया है ।

साठवाँ पटल

शक्तिपूजा रहस्य कथन नामक इस पटल में तत्त्वान्तासनकथन, आसन योग्यत्वायोग्यत्व कथन, विविधासन फल कथन, नित्यनैमित्तिक [illegible] लोप होने पर जप विधान एवं पीठ नव सोपान कथन है ।

१. धर्म ध्यान कथन, २. ज्ञान ध्यान कथन, ३. वैराग्य ध्यान कथन, ४. ऐश्वर्य ध्यान कथन, १. अधर्म ध्यान कथन, २. अज्ञान ध्यान कथन, ३. अवैराग्य ध्यान कथन, ४. अनैश्वर्य ध्यान कथन, दिक्विदिक् क्रमयोग द्वारा ध्यान दिग्दर्शन, १. ब्रह्मदेव ध्यान कथन, २. महाविष्णु ध्यान कथन, ३. महेश्वर ध्यान कथन, ४. रुद्र ध्यान कथन, ५. ईश्वर ध्यान कथन, १. ऋग्वेद ध्यान कथन, २. यजुर्वेद ध्यान कथन, ३. सामवेद ध्यान कथन, ४. अथर्ववेद ध्यान कथन, शक्ति योगाभ्यास कथन एवं अनुष्ठान फल वाहुल्य कहा गया है ।

इकसठवाँ पटल

शक्तियोग कथन नामक इस पटल में पुरश्चरण प्रयोग कथन, शक्तिपूजा माहात्म्य

१. धर्म ध्यान कथन, २. ज्ञान ध्यान कथन, ३. वैराग्य ध्यान कथन, ४. ऐश्वर्य ध्यान कथन, १. अधर्म ध्यान कथन, २. अज्ञान ध्यान कथन, ३. अवैराग्य ध्यान कथन, ४. अनैश्वर्य ध्यान कथन, दिक्‌विदिक् क्रमयोग द्वारा ध्यान दिग्दर्शन, १. ब्रह्मदेव ध्यान कथन, २. महाविष्णु ध्यान कथन, ३. महेश्वर ध्यान कथन, ४. रुद्र ध्यान कथन, ५. ईश्वर ध्यान कथन, १. ऋग्वेद ध्यान कथन, २. यजुर्वेद ध्यान कथन, ३. सामवेद ध्यान कथन, ४. अथर्ववेद ध्यान कथन, शक्ति योगाभ्यास कथन एवं अनुष्ठान फल बाहुल्य कहा गया है ।

इकसठवाँ पटल

शक्तियोग कथन नामक इस पटल में पुरश्चरण प्रयोग कथन, शक्तिपूजा माहात्म्य कथन, पूजाप्रयोग कथन, त्रिगुणात्मकता कथन, पूजनार्थ तिथि निर्णय कथन, पूजाकर्म में प्रशस्त तिथि कथन, कल्याणकारिणी तिथि कथन, गौरीपूजा विधि में प्रशस्त तिथि कथन, शिवपूजा विधि में प्रशस्त तिथि कथन, शक्तिपूजा विधि में विशेष फलदा तिथि कथन, प्रदोष त्रय कथन, शनि प्रदोष कथन, शिवशक्ति तिथि कथन, भौमाष्टमी तिथि कथन, प्रहरानुसार शिवशक्ति पूजा काल कथन, विशेष कथन, स्वाराज्य योग कथन, स्वाराज्य योग माहात्म्य कथन, काली योग कथन और स्तम्भ चतुष्क वर्णन है ।

१. धर्म स्तम्भ वर्णन, २. ज्ञान स्तम्भ वर्णन, ३. वैराग्य स्तम्भ वर्णन, ४. ऐश्वर्य स्तम्भ वर्णन, शिवयोग कथन एवं वाञ्छाकल्पलता योग कथन कहा गया है ।

बासठवाँ पटल

ब्रह्मराजाभिध योग कथन नामक इस पटल में नव दुर्गाभिधान, नववर्षोत्तर शक्ति कथन एवं पुरश्चरण पूजा प्रयोग कहा गया है ।

तिरसठवाँ पटल

मुद्राविवरण नामक इस पटल में पुरश्चरण प्रयोग कथन, कुमारी पूजन त्रिविधा गति, कुल दर्भ कथन, कालिकागम के अनुसार त्रिधा कुलदर्भ कथन, ब्रह्मकूर्च लक्षण कथन, सर्वबीजाढ्य कुलदर्भ कथन, ध्यानभेद क्रम कथन, मुद्राभेद कथन, पञ्चविध मुद्रा भेद कथन, १. दारिद्र्यनाशिनी मुद्रा कथन, २. अङ्काभिधा 'साम्राज्याख्या मुद्रा' कथन, ३. सर्वसिद्धिप्रदा मुद्रा कथन, ४. नाममुद्रा कथन, दश विद्या क्रम कथन, मुद्राधारण कथन, मुद्राधारण में यन्त्रकथन, वारुणेश्वर यन्त्र कथन, पैरों में यन्त्र धारण का फल कथन एवं रत्न धारण का फल कहा गया है ।

चौसठवाँ पटल

प्रायश्चित्त निर्णय कथन नामक इस पटल में विदीर्ण यन्त्र का उपाय कथन, स्फुटितादि विदूषित लिङ्ग के विषय में विशेष कथन, महाविद्या विधि में विशेष कथन, पुरश्चरण प्रयोग कथन, दीपिनी विद्या कथन, दीपपात्र परिमाण कथन, वर्तिका प्रमाण कथन तथा शैववैष्णवादि साधना भेद कथन कहा गया है ।

पैंसठवाँ पटल

यन्त्रशुद्धि कथन नामक इस पटल में बालापूजा प्रयोग कथन, यन्त्रशुद्धि विधान एवं उत्तमपीठ का प्रमाण कहा गया है ।

छाछठवाँ पटल

यन्त्रसंस्करणकथन नामक इस पटल में महायन्त्र का संस्कार कथन, पीठोत्तमत्वकथन, पीठपूजा का फल कथन, पीठ मान कथन, यन्त्रस्थापन कथन, गणेशादि पूजाप्रयोग कथन, मण्डपसज्जा कथन, यन्त्रगायत्री विधान, दिक्पति बलि विधान, पूर्णाहुति कथन एवं कुमारिका पूजन विधान कहा गया है ।

सरसठवाँ पटल

मृद्वासनकथन नामक इस पटल में मृद्वादिसप्तासनाद्यासन की साधना एवं शव

पैंसठवाँ पटल

यन्त्रशुद्धि कथन नामक इस पटल में बालापूजा प्रयोग कथन, यन्त्रशुद्धि विधान एवं उत्तमपीठ का प्रमाण कहा गया है ।

छाछठवाँ पटल

यन्त्रसंस्करणकथन नामक इस पटल में महायन्त्र का संस्कार कथन, पीठोत्तमत्वकथन, पीठपूजा का फल कथन, पीठ मान कथन, यन्त्रस्थापन कथन, गणेशादि पूजाप्रयोग कथन, मण्डपसज्जा कथन, यन्त्रगायत्री विधान, दिक्पति बलि विधान, पूर्णाहुति कथन एवं कुमारिका पूजन विधान कहा गया है ।

सरसठवाँ पटल

मृद्वासनकथन नामक इस पटल में मृद्वादिसप्तासनाद्यासन की साधना एवं शव साधना कथन, यन्त्र निर्माण कथन, मधुरमन्त्र कथन, जीवन्यास कथन, विनियोगकथन और इन्द्रादि दिक्पाल का यजनविधान कहा गया है ।

अरसठवाँ पटल

कपालपात्रविधि कथन नामक इस पटल में मुण्डासन प्रयोग कथन एवं सर्वविघ्न विनाशार्थं शिवाबलि का कथन है । शूलप्रोतादि की विधिकथन एवं कपालार्घ्य से इष्ट साधन कहा गया है ।

उनहत्तरवाँ पटल

मालामुण्ड साधन कथन नामक इस पटल में दीपोत्सव विधान, फाल्गुनोत्सव विधान, होढा नाम्नी राक्षसी की कथा वर्णित है । काम का अनङ्गत्व कथन, होडार्चन फल कथन, होढा राक्षसी दहन कथन, शूलवीर पूजन कथन, संविदादि नैवेद्य निवेदन, जागरणार्थं दीप दान निवेदन, मुण्डसाधनार्थ स्थान विधान, मुण्डसाधनार्थ पुरश्चरण प्रयोग कथन एवं साधित मुण्डों की माला का निरूपण है ।

सत्तरवाँ पटल

महामालाशोधन विधि कथन नामक इस पटल में मालारात्रि विधान, विनियोग कथन, चषक में मालाप्रक्षेप मन्त्र कथन, बिन्दुप्रक्षेप मन्त्र कथन, अभिमन्त्रण मन्त्र कथन, बलिदान मन्त्रोद्धार, मालारात्रि विधि कथन, दन्तमाला विधि में विशेष कथन, माला मन्त्रोद्धार, बलिदान मन्त्रोद्धार, शत्रुनिग्रहार्थ जगद्धूलि प्रयोग कथन एवं जगद्धूलि मन्त्रोद्धार कहा गया है ।

इकहत्तरवाँ पटल

दीक्षासन निर्णय कथन नामक इस पटल में दीक्षितासन विधान है । धातुमयासन कथन, काष्ठासन कथन, वस्त्रासन का मान और गजासन का प्राशस्त्य कहा गया है ।

तारा खण्ड का मुख्य प्रतिपाद्य—

शक्तिसंगम तन्त्र के प्रस्तुत द्वितीय खण्ड **तारा खण्ड** में मुख्य रूप से कुण्डलिनी

(शक्ति) के ही विषय में रहस्यमय विवेचन है ।

वस्तुतः **लता साधना** आदि के माध्यम से यही कथन है कि जब **शक्ति** (कुण्डलिनी) बैन्दव लोक से **आज्ञा चक्र**, आज्ञा चक्र से **विशुद्ध चक्र**, विशुद्ध चक्र से **अनाहत चक्र**, अनाहत चक्र से **मणिपूर चक्र**, मणिपूर चक्र से **स्वाधिष्ठान चक्र** एवं स्वाधिष्ठान चक्र से **मूलाधार चक्र** की यात्रा करती है तब सारे के सारे चक्र साधक के अधःपतन के ही सोपान बन जाते हैं ।

किन्तु जब वही कुण्डलिनी अपनी निद्रा का त्याग करके—मूलाधार से स्वाधिष्ठान, स्वाधिष्ठान से मणिपूरक, मणिपूरक से अनाहत, अनाहत से विशुद्ध, विशुद्ध से आज्ञा, आज्ञा से ललाटस्थ सहस्रार, सहस्रार से बिन्दु, बिन्दु से अर्धचन्द्र,

विषयानुक्रमणिका

...

शक्तिसङ्गमस्य तारखण्डे समागतानि ग्रन्थनामानि

अक्षोभ्यकक्षपुटी II ५४.४२
अङ्कचूडामणि II ५४. ४२
अङ्कार्णवसर्वस्व II ५४. ४२
यन्त्रसिद्धितन्त्र II ५४. ४१
रहस्य II ३३. ३०
लक्षणसंग्रह II १. १३